शिव भगवानुवाच - "एक का पाठ पक्का करो"

जब सब मे 1-1-1 होगी तब इस धरा पर स्वर्ग आयेगी।

1. एक धर्म

सरे दिन मे अत्मा कि मूल सातो गुण (अतिन्द्रिय सुख, अखंड शांति, परम आनंद, आत्मिक प्रेम, सम्पूर्ण पवित्रता (मन्सा, वाचा, कर्मणा), ज्ञान (त्रिकालदर्शि, त्रिनेत्रि, त्रिलोकिनाथ), शक्ति (अष्ठ शक्तियां) मे स्थित रहना ही अत्मा कि स्वधर्म (श्रेष्ठ धर्म) हैं।

2. एक राज्य

सारे दिन मे अत्मा मालिक बन कर्मेंद्रिया जीत, मन जीत हो। मै आत्मा मन को चलाऊ ना मन मुझको चलायें। मन मेरे ओर्डर माने। और माया बीच मे इन्टर्फ़ियर ना होवें। सदा मन बुद्धि को बुजी रख मायाजीत बन जाना ही एक राज्य स्थापन करना हैं।

3. एक भाषा

ब्रह्मण बनने के बाद पुरनी भाषा को कतम करना ही हैं। मुख से कभी भी ए आवाज नहीं निकले कि क्या करू, कैसे करू, पता नहीं क्या होगा आदी आदी... और सदा ध्यान रहे मधुर भाषा हॊ ना की आवॆश या क्रोध्युक्त भाषा ना हो। कड़ुवे (पत्तर बोल) शब्द मुख से ना निकलें।

4. एक टिक

सारे दिन मे इश्वरीय मत (श्रीमत) प्रमाण मन और बुद्धी को एक टिकाने दे देना हैं। मन और बुद्धी व्यर्थ या वाहयात बातॊ मे या झरमुई जगमुई मे नही बटकाना हैं। बुद्धी मे सारे दिन ज्ञान की बातें या इश्वरीय सॆवा अर्थ विचार चलते रहें।

5. एक रस

सारे दिन मे हर समय हर कदम मे बेहद ड्रामा के बिन्न बिन्न दृश्य को देखते हुए भी गबरा नहीं जाए और हमारी सच्चि कुशी नष्ट ना हों। कुछ भी हो हर बात मे कल्याण हैं समझ एक रस अवस्था मे रहें। अचल अडोल रहें ना कि माया की बिन्न बिन्न रस (चिन्ता, राग, द्वेष, भय, तिरस्कार, इर्षा, तनाव) कि अनुभव ना हों।

6. एक नामि

सारे दिन मे हर कर्म करते एक बाप की ही याद मे रहे। और कोइ भी देहधारी की नाम रूप मे फ़ँसे नहीं। मन और मुख पे करनकरावनहार बाबा शब्द हो।

7. एकानमि

सारे दिन मे समय, श्वास, संकल्प रूपी श्रेष्ठ अविनाशी खजानों की एकानमी हों। जब चाहे जैसे चाहे वैसे ही यूज हों। व्यर्थ ना हों।

समय रूपी खजानो की बचत

सारे दिन में ज्ञान की विचार सागर मंथन मे समय सफ़ल हों।
सारे दिन में संगम युग की महत्व को इश्वरीय सेवा मे समय सफ़ल हों।
सारे दिन में एक माशुक बाप की याद मे या रुह रिहान मे समय सफ़ल हों।
सारे दिन में आपस मे ज्ञान की चिट चाट मे समय सफ़ल हों।

श्वास और संकल्प रूपी खजानो की बचत

सारे दिन में हर आत्मा की प्रति शुभ भाव और भावना हों।
सारे दिन में हर घडी में साक्षिदृष्टा हों।
सारे दिन में सर्व संबंध का रस एक बाप से अनुभव करते चलें।

8. एक भाव

सरे संगम युगी ब्रह्मण जीवन में हर एक आत्मा के प्रति श्रेष्ठ (आत्मिक) भाव हों माना सबको सच्चे प्यार दे, अपस में एक दो में विश्वास रखे, सम्मान भाव हों, ना की ए ऐसा हैं, वो वैसा हैं इस रीति द्वैत भाव ना हों, सदा अद्वैत भाव हों।

9. एक भावना

सारे ब्रह्मण जीवन मे हर आत्मा को भाई भाई समझ कर सबके स्नेही, सहयोगी बन दुसरों को हमारे समान बनये या उनको आगें बढाने की शुभ भावना हो। सदा स्मृती रहे की दूसरों को आगे बढाना अर्थात स्वयं को पदम गुण आगे बढा देना। बाप से मिले हुए गुण और विशे

10. एक दृष्टी

सरे संगम युग मे हर अत्मा के प्रती बाप समान दृष्ठी हों। किसि के प्रती भी कुदृष्ठी ना हों। हर आत्मा की विशेशता ही देखे ना की अवगुण। हर आत्मा को नजर से निहाल करने की से सेवा के निमित्त हों।

11. एक वृत्ति

सरे दिन मे सेवा करते “त्याग वृत्ति, अनासक्त वृत्ति, बेहद्दिन वैराग्य वृत्ति हों।

त्याग वृत्ति:
सेवा के क्षेत्र पर हर घडी देह अभिमान, देह भान, देह के लगव, झुकाव, टकराव, सर्व विकारों कि त्याग वृत्ति हों। सर्वाश त्यागी ही संपूर्ण सफ़लता के अधिकारी बनेंगें।

अनासक्त वृत्ति:
हर दिन हर घडी इधर उधर की किसी आत्मा के प्रति ग्ल्यानी, निंदा, या बीती हुई बातो सुनने या सुनाने मे रिंचक मात्र भी आसक्ति नहिं हों। सदा स्मृति हो की "जहा आसक्ति है वहा माया भी आसकती हैं।

बेहद्दिन वैराग्य वृत्ति:
ब्राह्मण जीवन में कभी भी किसी भी प्रकार के इच्चाये, तृष्णायें, अशुद्द कामना नहीं रखाना हैं। इन सबसे वैराग्या या पुरानी भाव, स्वभाव, संस्कारों से वैराग्य धारण करने में ही कल्याण हैं।

12. एकान्त वासि
सारे दिन मे एक की याद मे अंत होना है या अन्तमती सो गती होगी, अर्थात इस अन्तिम समय मे जितना मन और बुद्धि शक्तिशाली होगी वहि सारे कल्प चलेगी। सदा शांती धाम और सुख धाम कि याद मे मन और बुद्धि स्थिर रहें।

13. एक लक्ष्य
ब्राह्मण जीवन मे हर एक ब्रह्मण आत्मा की श्रेष्ठ लक्ष्य यही होना अवश्यक है की "नर से नारायण और नारी से श्री लक्ष्मि" बनना हैं। जीवन मे साधारणता नहीं हो लेकिन हर बात मे विशेशता या श्रेष्ठता हों।

14. एक लक्षण
ब्राह्मण जीवन मे हमरे कथनी और करनी दोनो समान हो। हर बात मे ब्रह्मा बाप समान फ़रिश्ता सो देवताई चलन और चहरे दिखायी पडे। श्रेष्ठ तकदीरवान आत्मा की लक्षण हों।

15. एक नाथा
सारे ब्राह्मण जीवन में एक बाप से ही सर्व संबन्ध जोडना हैं। और किसी भी देहधारीयों से दिल की प्रीत नहीं लगनी हैं।

बाप के संबंध मे बाप के श्रीमत पर चल अपने ऊपर स्वयं कृपा करनी हैं।
टीचर के संबंध मे पढाइ अच्छे रीती पढ औरों को पढाना हैं।

सद्गुरू के संबंध मे मुक्ति और जीवन मुक्ति की श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त करना हैं।
माशुक के संबंध मे सच्चे पतिव्रता या पिताव्रता रहना हैं।

16. एक भल

ब्राह्मण जीवन में हर परिस्थिति मे "एक बाप दूसरा ना कोइ" का पाठ पक्का होना हैं। और किसी की अल्प काल के सहारा/आधार नहीं लेना हैं। एक बाप से ही सब कुछ मिलेगा और ब्रदर सिस्टर से कुछ नहीं मिल सकता हैं।

17. एक भरोसा

ब्राह्मण जीवन में सदा एवरेडी रहना हैं। क्योंकी मौत सामने खडा हैं। समय पर, श्वास पर बरोसा नहीं हैं और भरोसा नही रख सकते हैं। अभी अभी बाप ने कहा और हमने किया इसमे हीं महान कल्याण समाया हुआ हैं।

18. एक लगन/नशा

ब्राह्मण जीवन मे सदा एक ही लगन रहे कि यज्ञ सेवा की, स्वयं पुरुषार्थ की, स्वदर्शन की, बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता या कर्मातीत बनने की लगन मे मग्न अवस्था बनी रहें।

एसे सदा ब्राह्मण जीवन मे हर घडी, हर समय मे 1-1-1 बनने का पाठ पक्का हों तो भविष्य में नंबरवन पद के अधिकारी बन जायेंगें।

In Beloved Baba's Powerful Yaad and Sewa
Godly Student